भूमिका

भीष्म साहनी के उपन्यासों की ओर मैं कैसे मूड़ी? यह भी एक दिलचस्प बात हैं। आज से चार-पाँच बरस पहले मैंने गोविंद निहलानी के निर्देशनमें बना "तमस" टि॰व्ही॰ धारावाहिक बड़े ध्यान से देखा था। और इसकी ओर मैं बड़ी प्रभावित हो गयी। इसलिए मैंने सोचा की उनके उपन्यासों को लेकर शोधकार्य करूँ, उसके बाद मैं मेरे गुरू डॉ॰सरदार मुजावर से मिली। उपरोक्त विषय के बारे में चर्चा की और विषय का निर्धारण हुआ - "भीष्म साहनी की उपन्यासों में चित्रित समस्याएँ"।

साठोत्तरी हिन्दी उपन्यासों में भीष्म साहनी साहित्यकार माने जाते हैं उनके साहित्य का जन्म आधुनिक युग की पहचान से हुआ है। कृषि प्रधान भारत देश की आधुनिकता का परिचय उनके उपन्यासों में मिलता है। भीष्म साहनी के सभी उपन्यास सच्चे अर्थों में समाज का दर्पण है। उन्होंने भारत देश के सभी सम्प्रदायों का उल्लेख "तमस" में किया है। "तमस" में आज़ादी के पहले की समस्या और उसके बाद की समस्याओं का यथार्थ रूप से चित्रण किया है। उनके साहित्य में सामंन्तवाद, पूँजीपति के अन्तर्विरोध का वर्णन मिलता है। भीष्म साहनी के सभी उपन्यासों में सामाजिक यथार्थ का चित्रण मिलता है।

"तमस" उपन्यास में भीष्म साहनी ने सांम्प्रदायिक समस्या और हिंदू-मुस्लिम झगड़ों का समाज और आनेवाली नयी पीढ़ी पर क्या असर हुआ ? इसका यथार्थ प्रस्तुत किया है। भीष्म साहनी का एक ही उद्देश्य है - 'मानवता'। हर एक व्यक्ति में एक दूसरे के प्रति आदर, प्रेम की भावना प्रकट होनी चाहिए। लेखक ने मानवता धर्म की माँग करते हुए हमारे भारत देश के महान आदर्शों का चित्रांकन किया है।

भीष्म साहनी के उपन्यासों मे चित्रित समस्याएँ- यह मेरा शोधकार्य के क्षेत्र में प्रथम चरण है, इस संक्षिप्त लघु-प्रबन्ध को आपके सामने प्रस्तुत करते हुए, मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है।

विनीत

कु॰ अलका सुधाकर गुरव

रूपरेखा

प्रथम अध्याय : भीष्म साहनी जीवनी - व्यक्तित्व और कृतित्व

मेरे शोध प्रबन्ध का प्रथम अध्याय है। इसमें भीष्म साहनी के जीवन और उनके कृतित्व का परिचय प्रस्तुत किया है। भीष्म साहनी को साहित्य लिखने की प्रेरणा परिवार से ही मिली है। प्रथम अध्याय में उनका जन्म, बचपन, माँ-बाप, भाई, परिवार, शिक्षा, नौकरी, मित्र, उनकी आदतें, पत्नी, पुत्र-पुत्रियाँ और उनके कृतित्व को भी प्रस्तुत किया गया है।

द्वितीय अध्याय : भीष्म साहनी के उपन्यासों का सामान्य परिचय

इसमें उनके सभी उपन्यासों का परिचय प्रस्तुत किया गया है। "तमस", "बसन्ती", "मय्यादास की माड़ी" का संक्षेप में कथानक, उपन्यास के प्रमुख पात्रों के संवादों की सजीवन का विश्लेषण किया है।

तृतीय अध्याय : भीष्म साहनी के उपन्यासों में चित्रित समस्याएँ

भीष्म साहनी "तसम" उपन्यास में साम्प्रदायिकता का स्वरूप और हिन्दु -मुस्लिम भेद-भाव, धर्म के नाम पर झगड़े और साम्प्रदायिकता की समस्या को प्रस्तुत किया है।

आर्थिक समस्या को भी प्रस्तुत किया गया है।

"तमस" मे दूसरी समस्या हैं भारत विभाजन की समस्या और विभाजन के बाद भी हिन्दू मुस्लिम समस्या मौजूद हैं। देश विभाजन की समस्या का परिचय दिया हैं।

चतुर्थ अध्याय : उपसंहार

उपसंहार में संपूर्ण लघु-शोध-प्रबन्ध का सारांश प्रस्तुत किया है - "तमस", "बसन्ती", "मय्यादास की माड़ी", "कडियाँ" इन उपन्यासों में चित्रित समस्याओं का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया गया है।

"तमस" में स्पष्ट किया गया है कि साम्प्रदायिकता ही संस्कृति नहीं है। हमारे समाज को जिस धर्म की आवश्यकता है, वह धर्म है मानवता। मानवता ही तमस में उजागर होती है - आर्थिक, साम्प्रदायिकता और विभाजन की समस्याओं को उनके यथार्थ रूप में यहाँ अंकित करने की कोशिश की गई है।

ऋण निर्देश

मेरे इस लघु-शोध-प्रबंध को पूर्ण करने में कई महानुभवों का प्रत्यक्ष सहयोग मुझे मिला है। उनके प्रति आभार प्रकट करना मै अपना नैतिक दायित्व समझती हूँ। साहित्य की अन्य विधाओं की अपेक्षा उपन्यास साहित्यविधा जीवन के सर्वाधिक निकट है। लेकिन किसी भी विषय पर समीक्षात्मक अध्ययन करना कठिन कार्य है। "तमस" यह साम्प्रदायिक उपन्यास है और साम्प्रदायिक समस्या बहुत नाजूक समस्या है। "भीष्म साहनी के उपन्यासों में चित्रित समस्याएँ" इस लघुप्रबन्ध को परिपूर्ण बनाने के लिए, डॉ॰ सरदार मुजावर, हिन्दी प्रपाठक, हिन्दी विभाग, किसन वीर कॉलेज वाई का अनमोल मार्गदर्शन मुझे प्राप्त हुआ हैं। आप के सहयोग के बिना यह कार्य संपन्न होने की कल्पना ही नहीं की जा सकती। प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध आप ही के सुयोग्य निर्देशनका परिणाम हैं

डॉ॰पी॰एस॰पाटील, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर इनकी प्रेरणा से मेरा कार्य प्रभावशाली बना उनकी मैं ऋणी हूँ। डॉ॰गजानन सुर्वे, रीडर एवं अध्यक्ष, लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा, प्राचार्य पुरूषोत्तम शेठ, सातारा, प्रा॰सौ॰शैलजा पाटील, महिला महाविद्यालय कराड, बी॰एन॰मुल्ला, वेणूताई चव्हाण महाविद्यालय, कराड इन्होंने मुझे सुयोग्य मार्गदर्शन किया, मैं उनकी हृदय से ऋणी हूँ। इसके साथ वेणुताई चव्हाण महाविद्यालय कराड का ग्रंथालय और एस॰जी॰एम॰कॉलेज का ग्रंथालय के सहयोग को मैं कभी नहीं भूल सकती। इन ग्रंथालयों के ग्रंथपाल एवं संबंधित कर्मचारियों की मैं आभारी हूँ। मेरे पिता श्री॰सुधाकर गुरव, पूज्य माता, भाई सुहास, सुधीर, बहन रजनी उनके पति अशोक चाचा श्री॰दिनकर गुरव और मेरे पति रविंद्र, अन्य परिवार के सदस्यों की प्रेरणा तथा उनका पर्याप्त सहयोग रहा है। इन सबके सहयोग के बिना प्रबंध पूरा करना असंभव हो जाता। उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करना कृतघ्नता होगी।

इस प्रबन्ध का अत्यंत तत्परता से टंकन/ लेखन करनेवाले **"रिलेक्स सायक्लोस्टायलिंग सातारा"** के श्री· मुकुन्द ढवळेजी और उनके सहयोगी श्री· सुशीलकुमार कांबळेजी के प्रति मैं आभारी हूँ।

शोध छात्रा

(कु. अलका सुधाकर गुरव)

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय : भीष्म साहनी : जीवनी व्यक्तित्व और कृतित्व

द्वितीय अध्याय : भीष्म साहनी के उपन्यासों का सामान्य परिचय

तृतीय अध्याय : भीष्म साहनी के उपन्यासों में चित्रित समस्याएँ

चतुर्थ अध्याय : उपसंहार

परिशिष्ट - संदर्भ ग्रंथ सूची